

विक्रम संवत्-२०३६, श्रावण सुद-२, मंगलवार, ता. १२-८-१९८०  
 वचनामृत-३७, ३८, ४५. प्रवचन नं. ५

**‘मैं अबद्ध हूं’, ‘ज्ञायक हूं’, यह विकल्प भी दृःभ्रूप लगते हैं, शांति नहीं मिलती, विकल्पमात्रमें दृःभ ही दृःभ भासता है, तब अपूर्व पुरुषार्थ उठाकर वस्तुस्वभावमें लीन होने पर, आत्मार्षी ज़ुबको सब विकल्प छूट जाते हैं और आनंदका वेदन होता है.’ ३७.**

वचनामृत, ३७वां बोल, ३७. थोड़ी सूक्ष्म बात है. मूलकी बात है न. ‘मैं अबद्ध हूं’. धर्मी विचार करता है, समकित प्राप्त करनेके लायक. वह ऐसा विचार करता है कि मैं तो अबद्ध हूं. अर्थात् मैं मुक्त हूं. अबद्ध नास्तिसे है, मुक्त अस्तिसे है. मैं मुक्तस्वरूप हूं. आलाला..! वह पुरुषार्थ कब काम करे? मैं पूरी दुनियासे भिन्न, रागसे भिन्न, अेक समयकी पर्यायसे भी भिन्न... आलाला..! ऐसा मैं अबद्ध हूं.

‘ज्ञायक हूं’ मैं तो त्रिकाल ज्ञाननेवाला हूं. ‘यह विकल्प भी दृःभ्रूप लगते हैं.’ आलाला..! जिसको ऐसा विकल्प भी दृःभ्रूप लगे, वह समकित दूँढनेको अंदर जाय. आलाला..! सूक्ष्म बात है, भाई! धर्म कोई ऐसी चीज नहीं है कि बाहरसे मिल जाय. आलाला..! अबद्ध और ज्ञायक हूं, ऐसा जो विकल्प-रागकी वृत्ति उठती है, वह भी दृःभ्रूप है. है शुभ, लेकिन है राग, है दृःभ्रूप. शुभ और अशुभराग दोनों दृःभ्रूप है. भगवान आत्मा अंदर मुक्तस्वरूप, आनंदस्वरूप है. तो जिसको सम्यग्दर्शन प्राप्त करना है, धर्मकी प्रथम सीढी, धर्मका प्रथम सोपान. आलाला..! अबद्ध और ज्ञायक हूं, ऐसा विकल्प भी दृःभ्रूप लगता है. आलाला..! ऐसी वृत्ति उठती है अंदरमें उसको विकल्प कहते हैं. लेकिन वह विकल्प दृःभ्रूप है. आत्मा अतीन्द्रिय आनंदमय है. उससे, मैं अबद्ध हूं, ऐसा विकल्प उठे वह भी दृःभ्रूप है. आलाला..! धर्म कोई अलौकिक बात है, प्रभु! आलाला..!

‘वह विकल्प भी दृःभ्रूप लगते हैं,...’ ‘भी’ क्यों कहा? दूसरी चीज तो दृःभमें निमित्त है ही, लेकिन यह विकल्प भी दृःभ्रूप है. आलाला..! मैं ज्ञायक हूं, अबद्ध हूं, ऐसी वृत्ति अंदरमें उठती है, वह भी दृःभ्रूप (है). स्वभावसे भिन्न है. ‘शांति नहीं मिलती,...’ ऐसी विकल्पकी भूमिकामें शांति नहीं है. शांति तो विकल्पसे भिन्न

होकर अंतर अतीन्द्रिय आनंदमें आवे तब उसको शांति मिलती है. तबतक सब अशांति वेदता है. कोडपति हो या अरबपति हो, सब दुःखी है. आलाला..! यहां तो मैं अबद्ध हूं, ऐसा विकल्प उठाये, वह भी दुःखी है. आलाला..! कठिन बात है, प्रभु! कोडपति और अरबपति बड़े दुःखी हैं. आङ्किकमें देखा था न. अभी आङ्किक गये थे न. ४५० तो यहां कोडपति है. नाईरोबीमें. हम गये थे, २६ दिन. लोगोका प्रेम बहुत था, बहुत प्रेम था. ४५० कोडपति और १५ अरबपति. सब आते थे. मैंने कहा, वह सब धूल है. वह मेरी है, ऐसी मान्यता, १४ मेरा है, ऐसी मान्यता ही मिथ्यादृष्टिकी है. जोव अजोवको अपना माने.. आलाला..! कठिन काम है. जोव-भगवान मुक्तस्वरूप बाह्य चीजको अपनी माने वह मिथ्यात्व है, मिथ्यात्व है, अशांति है, यहां दुःख है.

‘शांति नहीं मिलती, विकल्पमात्रमें दुःख ही दुःख भासता है,...’ ये तो बहिनके वचन हैं. बहुत संक्षेपमें बोले थे, उसे विजय लिया है. अतीन्द्रिय आनंदमें अनुभवमें आकर वह सब शब्द बाहर आये हैं. अतीन्द्रिय आनंदका स्वाद लेकर. बहन अलौकिक चीज है! लोगोको ज्वाल नहीं आये. मुझे जैसा लगे. अंदरमें तो अकटम आनंद.. आनंद.. आनंद (है). उनके शब्दमें, विकल्पमात्रको दुःखरूप कहकर... आलाला..! सब दुःख भासता है. ‘तब अपूर्व पुरुषार्थ उठाकर...’ क्या करते हैं? अपना स्वभाव शरीर, वाणी, मन तो नहीं, पुण्य-पापका विकल्प उठता है वह तो नहीं, मैं ऐसा हूं, ऐसा जो विकल्प उठता है, उसे छोड़नेको अपूर्व पुरुषार्थ चालिये, प्रभु! अपूर्व पुरुषार्थ चालिये. अपूर्व नाम पूर्वमें कभी नहीं किया. बाकी सब व्यर्थ किया. क्रियाकांड उतनी डी. नौवीं त्रैवेयक गया. ‘मुनिव्रत धार अनंत और त्रैवेयक उपजयो, पै आत्मज्ञान बिन लेश सुभ न पायो.’ सुभ नहीं प्राप्त किया. पंच महाव्रत दुःख है. पंच महाव्रतके परिणाम राग और आस्रव और दुःख है. आलाला..! उससे बिना अनंत बार ऐसी क्रिया डी और चारह अंगका ज्ञानपना भी अनंत बार किया. लेकिन मैं निर्विकल्प वस्तु अभंडानंद प्रभु मुक्तस्वरूप हूं, ऐसा अनुभव कभी किया नहीं. कहीं-कहीं अटकता है, रुकता है. आलाला..!

‘अपूर्व पुरुषार्थ उठाकर...’ प्रभु! तुझे उस विकल्पमें दुःख लगे, मैं ज्ञायक हूं, अबद्ध हूं, जैसे विकल्पमें यदि दुःख लगे, दुःख ज्वालमें आये तो ‘अपूर्व पुरुषार्थ उठाकर...’ आलाला..! ‘वस्तुस्वभावमें लीन होने पर...’ भगवान आत्मा पूर्णानंदका नाथ अनंत चैतन्य रत्नाकर, अनंत चैतन्यके रत्नसे भरा भगवान. आलाला..! जिसके पास ईन्द्रके ईन्द्रासन सदा हुआ तिनका और मरकर बिहारी सड गई हो, जैसे

ईन्द्रके ईन्द्रासन समकितके आगे लगेते हैं. आलाहा..! ईसलिये कहते हैं कि यदि तुझे उस विकल्पमें दुःख लगे तो 'वस्तुस्वभावमें लीन होने पर...' अपना पुरुषार्थ करना. आला..! भाषा तो और क्या करे? आलाहा..! विकल्पमात्र राग उससे छूटकर अंतरमें अपूर्व पुरुषार्थ करे, रागसे लटकर, विकल्पसे लटकर निर्विकल्प आनंदस्वरूपमें लीन हो. आला..! 'लीन होने पर, आत्मार्थी जवको सब विकल्प छूट जाते हैं...' आत्मार्थीक जवको. शर्त यह. आत्मार्थी-अपना आत्मा ही अेक प्रयोजन है, दूसरा कुछ नहीं. आत्माका ही मुझे प्रयोजन है, दूसरी कोई चीज नहीं. जैसे आत्मार्थी है, उसको सब विकल्प छूट जाते हैं. आलाहा..! तब सम्यग्दर्शन होता है. धर्मकी पहली सीढ़ी. धर्मका प्रथम सोपान. सर्व विकल्प दुःखरूप लगे और अपूर्व पुरुषार्थ करे तो वस्तुमें लीन हो जाय. आलाहा..! ऐसी कठिन बात है.

मुमुक्षु :- सब विकल्प छूट जायेगा तो ... हो जायेगा.

उत्तर :- अंदरमें आत्मामें लीन होना. विकल्पमें है तो प्रभु दुःखमें है. ... आया न? 'वस्तुस्वभावमें लीन होने पर...' आलाहा..! भाई! मार्ग दूसरा है. अंदरकी रीत और अंदर ... आलाहा..! दुनियाको बाहरकी प्रवृत्ति मिली है. अंदर मुक्तस्वरूप भगवान् बिराजता है. सब भगवान् है. अंदरमें शरीरसे भिन्न, रागसे भिन्न, अेक समयकी पर्याय जितना नहीं. जैसे भगवान् सबके अंदर विराजता है. अेक बार तू अपने भगवान्के पास जा तो सही. आलाहा..! अंदर चैतन्यप्रभु विराजता है, उसके पास जानेसे, लीन होनेपर आत्मार्थीजवको सब विकल्प छूट जाते हैं. आला..! वस्तुस्वभावमें अंतरमें लीन होनेसे सब विकल्प छूट जाते हैं 'आनंदका वेदन होता है.' विकल्प दुःख है. सब विकल्प जब छूट जाते हैं, तब आनंद आता है. वह आत्मा है. अतीन्द्रिय आनंद आये वह आत्मा. अतीन्द्रिय आनंद. ये ईन्द्रियके जे विषय हैं, करोडोपति और अरबपति सब दुःखी हैं बेचारे. ऊहरका ध्यावा पीता है. ईन्द्रियके विषय ऊहरका ध्यावा है. आलाहा..!

अभी आइका गये थे न. आइकामें ४५० तो कोडपति है और १५ अरबपति हैं. लोग तो बहुत आते थे. लोगोंको प्रेम है न. मलाजन लोगोंको. कहा, सब दुःखी है. १५ तो अरबपति, ४५० कोडपति. धूल है सब, कहा. यहां तो आत्मामें राग (आये कि), मैं शुद्ध हूं, पवित्र हूं, अखंड हूं, अेक हूं, जैसे विकल्प उठाना भी दुःख है. आलाहा..! कठिन लगे, प्रभु! क्या हो?

बलनकी भाषा तो अनुभमेंसे आयी है. बलनोंने (विभ लिया). उनके नीचे ६४ बाल ब्रह्मचारी है. नौ बलनोंने विभ लिया. उनको तो मावूम भी नहीं था

कि ये विष लेंगे. उनको तो बाहर आनेका बिलकूल भाव नहीं है. अंदर आनंदके अनुभवमें अनुभूतिमें रहती है.

यहां कहते हैं, आत्मार्थी जोवको सब विकल्प छूट जाते हैं. आलाला..! अंतरमें जानेसे सब विकल्प छूट जाते हैं और आनंदका वेदन होता है. यह आत्मा है. विकल्प आत्मा नहीं है. मैं शुद्ध, अबद्ध हूं, ऐसा विकल्प आत्मा नहीं है. वह अनात्मा है. विकल्प जो है. है दुःखरूप है, लेकिन जो है. क्यों? कि चैतन्यका अंश उसमें नहीं है. विकल्प जो उठता है, उसमें चैतन्यप्रभु चैतन्यप्रकाशकी मूर्ति उसका अंश उसमें नहीं है. और स्वयंको जानता नहीं ठसलिये जो है. आलाला..! विकल्प शुभराग जो है. वह चैतन्य नहीं. आलाला..! चैतन्यकी ओर जुकनेसे तुझे आनंदका वेदन होता है. आलाला..! ऐसी चीज है, भैया!

मुमुक्षु :- यह तो अंकांत मार्ग हुआ.

उत्तर :- अंकांत मार्ग ही है. सम्यक् अंकांत ही है. पंडितजी! नय है, सम्यक् अंकांत नय है.

मुमुक्षु :- नय सम्यक् अंकांत है.

उत्तर :- प्रमाणमें पर्याय आ जाती है, नयमें नहीं. शुद्धनयमें अंकांत पूर्णानंदका नाथ प्रभु अनादि सत्ता, अनादि शुद्ध, अनादि परमपुरुष परमात्मा, ऐसी चीज आत्मा है. आलाला..! उसको प्राप्त करके आनंदका वेदन होता है. उ७वां पूरा हुआ. आलाला..!

**आत्माको प्राप्त करनेका जिसे दृढ निश्चय हुआ है उसे प्रतिफल संयोगोंमें भी तीव्र अपेक्षा कठिन पुरुषार्थ करना ही पड़ेगा. सस्या मुमुक्षु सद्गुरुके गंभीर तथा मूल वस्तुस्वरूप समझमें आये जैसे रहस्योंसे भरपूर वाक्योंका जूझ गहरा मंथन करके मूल मार्गको ढूंढ निकालता है.**

३८.

३८. 'आत्माको प्राप्त करनेका जिसे दृढ निश्चय हुआ है...' यह पहली शर्त. कोई चीज मुझे नहीं चालिये, अंक आत्मा चालिये. ऐसा जिसका दृढ निश्चय है. 'आत्माको प्राप्त करनेका जिसे दृढ निश्चय हुआ...' आलाला..! यह शर्त. कोई भी कल्पना, चिंता कुछ नहीं चालिये. दुनिया दुनियामें रही. मेरी चीज अंदर भिन्न है, ऐसा 'आत्माको प्राप्त करनेका जिसे दृढ निश्चय हुआ है...' शर्त यह. दृढ निश्चय

हुआ है, प्राप्त करनेका. आलाला..!

‘उसे प्रतिकूल संयोगोंमें भी...’ उसे प्रतिकूल संयोग नर्क आदिका हो. आलाला..! श्रेणिक राजा क्षायिक समकित्ती है और तीर्थकर गोत्र बांधते हैं. भविष्यमें तीर्थकर होंगे. अभी अतीन्द्रिय आनंद उसको भी है. जितना राग है, उतना वहां दुःख भी है. नर्कमें, पहली नर्कमें है. फिर भी अनुभव हुआ उसका आनंद भी है और जितने तीन कषाय बाकी है (उतना दुःख भी है). संयोगका दुःख नहीं है. प्रतिकूल संयोगका दुःख नहीं है, दुःख तो अंदर राग-द्वेष करे वह दुःख है. प्रतिकूल संयोग या अनुकूल संयोग तो ज्ञेय है. सब चीज, आत्माके सिवा आत्मा ज्ञायक और वह सब ज्ञेय है. ज्ञेयके दो भाग करना कि वह ठीक है और अठीक है, वह मिथ्यात्व है. आलाला..! समझमें आया?

वहां तो कहते हैं कि अपनेमें एक वस्तु प्राप्त करनेका दृढ निश्चय हुआ है. ‘उसे प्रतिकूल संयोगोंमें भी तीव्र एवं कठिन पुरुषार्थ करना ही पड़ेगा.’ आलाला..! श्रेणिक राजा जैसे सर झोडकर देह छूटा. क्षायिक समकित्ती थे. क्षायिक समकित. कोणिक उसे बचाने आया. कोणिक. कोणिकने उसे कैदमें डाला था. फिर तो उसकी माने कला तो उसे बचाने आया. लेकिन उन्हें भ्रम हुआ कि ये मुझे मारने आ रहा है. समकित्ती है, लेकिन बाह्यमें ज्वाल नहीं रहे और भ्रम भी हो जाये.

मुमुक्षु :- कुछ समझमें नहीं आया.

उत्तर :- श्रेणिक राजा क्षायिक समकित्ती. उसको भ्रम हुआ. कोणिकने उसे पहले कैदमें रखा था. उसकी माताने सब बात की. तेरा जन्म हुआ था. तेरे पिताको लेने आये थे. तू पेटमें था. तो मुझे अंदर ऐसा स्वप्न आता था कि श्रेणिकका भुन पी लूं, श्रेणिकका हृदय भाऊं. इसलिये तेरा जन्म हुआ तो तुझे झूठे ढेरमें डाल दिया. जन्म लिया उसी दिन कचरेके ढेरमें डाल दिया. उकरडा समझे? कचरेका ढेर. वहां श्रेणिक आया. श्रेणिकको मावूम हुआ. उनको मावूम है कि इसे जैसे स्वप्न आये थे, मुझे मारनेके. वहां गये. जन्मके बादका पहला दिन. वहां मुर्गीयां थी. मुर्गीयोंने चोंच मारी थी. इसलिये पीडा हो रही थी. श्रेणिक राजा हाथमें अंगूली लेकर यूसते थे. आलाला..! श्रेणिक राजा घर आये. फिर जब समकित प्राप्त किया... आलाला..! विकल्प आता है. लेकिन वह दुःख नहीं है. विकल्पका दुःख है, लेकिन जितना विकल्पसे रहित हुआ उतना आनंद है. कठिन बात है, प्रभु! आलाला..!

श्रेणिक राजा अपनेमें क्षायिक समकितमें थे. फिर कोणिक आया और सर झोडा तो भी समकितमें दोष नहीं है. चारित्रका दोष समकितमें दोष लगाता नहीं. एक

गुणका दोष दूसरे (गुणमें) लगता नहीं. चारित्रका षट्ना दोष होने पर भी क्षायिक समकितमें किंचित् भी इरकार नहीं. आलाला..!

यहां वल कलते हैं कि 'आत्माको प्राप्त करनेका जिसे दृढ निश्चय हुआ है उसे प्रतिकूल संयोगोंमें भी तीव्र अवं कठिन पुरुषार्थ करना ही पडेगा.' पुरुषार्थ बिना नहीं मिलेगा. कमबद्धमें आयेगा. आलाला..! कमबद्ध-सर्व द्रव्यकी पर्याय कमबद्ध है. जिस समय जहां होनेवाली होगी, उस क्षेत्रको नरेन्द्र, जिनेन्द्र बदल नहीं सकते. जहां-जहां जिस समय जो पर्याय होनेवाली है वल होगी, होगी और होगी. कमसर होगी. उसमें इरकार नहीं कर सकता. लेकिन ऐसा जिसकी श्रद्धामें आता है, उसकी दृष्टि द्रव्य पर जाती है. द्रव्य पर. ज्ञायक पर जाती है. तब कमबद्धका निर्णय होता है. कमबद्ध वस्तु है. कोर भी पर्याय आगेपीछे होती नहीं. आगेपीछे पर्याय होती नहीं. कमसर जो होनेवाली होती है वल होती है. ऐसा जब निर्णय करने जाता है, (उसकी) आत्माकी ओर दृष्टि जाती है. तब कमबद्धका निर्णय होता है. आलाला..!

दो बात कही थी. बहुत सालसे दो कल रहे हैं. अक तो, अक तत्त्व दूसरे तत्त्वको छूता नहीं. आलाला..! अक द्रव्य दूसरे द्रव्यको छूता नहीं. वल अंगूली षस अंगूलीको छूती नहीं, उसको छूती नहीं. भगवानको कर्म छूते नहीं, कर्मको आत्मा छूता नहीं. आलाला..! प्रत्येक आत्मा प्रत्येक समयमें अपनी पर्याय करे, लेकिन परकी पर्यायके साथ कुछ नहीं. परके साथ कोर संबंध नहीं है. आलाला..! ऐसा कमबद्ध (है). और तीसरी गाथा. अपना द्रव्य दूसरे द्रव्यको चुंबता नहीं. मूल पाठ है, संस्कृत है. अक द्रव्य दूसरे द्रव्यको, अक परमाणु दूसरे परमाणुको छूता नहीं. आत्मा परमाणुको छूता नहीं. परमाणु दूसरे परमाणुको छूता नहीं, कर्म आत्माको छूता नहीं. आलाला..! तीसरी गाथा है, समयसार. वहां चुंबन शब्द है. अक द्रव्य दूसरेको चुंबता नहीं. चुंबता नहीं यानी स्पर्श नहीं करता है, छूता नहीं. आलाला..! अरे..! ऐसी पूरी दुनिया. अक द्रव्य अनंत द्रव्यके बीचमें रहना, इर भी वल दूसरे द्रव्यको छूता ही नहीं. आलाला..! ऐसी जब अंदर दृष्टि होगी, तो दृष्टि द्रव्य पर जायेगी. आलाला..!

मुमुक्षु :- दृष्टि भी जब अंतरमें जानेवाली होगी तब जायेगी.

उत्तर :- जानेवाली है, लेकिन पुरुषार्थ करे तब. अपने आप जायेगी? है कमबद्ध. कमसर होगा. लेकिन उस कमबद्धमें पुरुषार्थ है. कमबद्धका निर्णय करने जाता है तो आत्मा पर दृष्टि पडती है, तब कमबद्धका निर्णय होता है. कमबद्ध पर्यायमें

होता है. पर्यायिका निर्णय पर्यायिसे नहीं होता. सूक्ष्म बात है, प्रभु! पर्यायिका निर्णय पर्यायिसे नहीं होता. पर्यायिमें निर्णय द्रव्यसे होता है. निर्णय होता है पर्यायिमें, ध्रुवमें नहीं. ध्रुवका निर्णय पर्यायिमें आता है. आह्लाहा..! भाषा सूक्ष्म है, प्रभु! लेकिन मार्ग तो यह है. आह्लाहा..!

यह तो बहिनके वचनामृत पढनेको कला. सबके पास पुस्तक भी है. आह्लाहा..! 'कठिन पुरुषार्थ करना ही पडेगा. सख्या मुमुक्षु सहगुरुके गंभीर तथा मूल वस्तुस्वर्प समझमें आये जैसे रहस्योंसे भरपूर वाक्योंका भूज गहरा मंथन करके...' आह्लाहा..! जे गूरा वाणी आये - अक द्रव्य दूसरे द्रव्यके छूता नहीं और सर्व द्रव्यकी पर्यायिके कालमें ही पर्यायि होगी, आगेपीछे होगी नहीं. जैसे मोतीके हारमें जहां मोती है वह वहां रहेगा, आगेपीछे नहीं. वैसे भगवान आत्मा और प्रत्येक द्रव्य क्रमसर जे पर्यायि होनेवाली है वह होगी. आगेपीछे नहीं. आघापाछीको क्या कहते हैं? आगेपीछे. हमको हिन्दी बहुत नहीं आती. हम काठियावाडी है. आह्लाहा..!

कहते हैं, 'सख्या मुमुक्षु...' ज्ञानीने गंभीर बात कही हो, 'मूल वस्तुस्वर्प समझमें आये जैसे रहस्योंसे भरपूर वाक्योंका...' आह्लाहा..! 'भूज गहरा मंथन करके...' भूज गहरा मंथन. आह्लाहा..! अंतरमें उतरनेका गहरा मंथन करके अंदर जाना, तब आत्माका पत्ता लगेगा. आह्लाहा..! कठिन बात है, प्रभु! कोई किया अथवा पर्यायि-पर्यायि उपवास कर ले, या दो-पांच कोड रुपया देकर मंदिर बना दे, कुछ नहीं है. धर्म-अर्म नहीं है. उसमें धर्म है नहीं. वह तो कला था. हम नाईरोबी गये थे न. ४५० तो वहां कोडपति है, १५ तो अरबपति है. उन्होंने पैसा अर्च करके २५ लाखका मंदिर बनाया. २५ लाखका मंदिर. कला, कोडका बनाओ तो भी धर्म नहीं है. और वह चीज तुमसे नहीं बनती. बननेकी चीजके कालमें जडकी पर्यायि होनेके कालमें वह बनती है, उसका आत्मा कर्ता नहीं. आह्लाहा..! सब सुनते थे. बहुत प्रेमी थे. यहाँके परिचीत थे. ईसलिये बहुत आग्रह किया तो गये न. यहाँ तो ८१ साल हुआ. ८१. नौ और अक-८१ वर्ष. उनका आग्रह बहुत था. लोगोंका प्रेम भी बहुत था. बहुत लोग. पैसा भी ... ६० लाख ईकहा हुआ. ६० लाख. उन्होंने ईकहा किया, प्रभावनाके लिये. वह तो बाहरका शुभभाव है. उसमें कुछ भी धर्मका अंश (नहीं) है. मंदिर बनवाना है, पर्यायि लाखका मंदिर बनाना है, कला, उसमें कुछ भी धर्म-अर्म नहीं है.

मुमुक्षु :- ..

उत्तर :- कौन बनाये? बननेके कालमें क्रमबद्धमें आयेगी तब अंधेगा. कठिन

जात है, प्रभु! क्या हो? जिस समय आनेवाले हैं उस समय पुद्गल आयेंगे। कारीगरसे भी वह मकान बनता नहीं। आलाहा..! कठिन काम है।

यहां तो आत्मा ज्ञायक स्वरूप भगवान, उसके विकल्पमें यहि दुःख लगे तो मलापुरुषार्थ करके अंदरमें जाना। आलाहा..! अपूर्व पुरुषार्थ और तीव्र पुरुषार्थ करके अंदरमें जाना। आलाहा..! वह तो अके बार कला था। जो कोई शुभभावसे सामायिक अंगीकार करते हैं, सामायिक अंगीकार करते हैं। समयसारमें पाठ है। लेकिन शुभभावको छोड़ते नहीं। स्थुण स्थुण अशुभभाव संक्लेशको छोड़ते हैं, लेकिन शुभ स्थुणको छोड़ते नहीं। ऐसा पाठ है। उसको नंपुसक कला है। क्लिव पाठ है, पाठमें क्लिव है। क्लिव मूल संस्कृतमें है। आलाहा..!

मुमुक्षु :- समझमें नहीं आया, आप क्या इरमा रहे हैं।

उत्तर :- नहीं समझे? आत्मामें.. आलाहा..! जब राग-शुभराग होता है, वह मंदिर बनवानेकी किया आत्मा कर सकता नहीं, वह तो दूसरे परमाणुसे बननेके कालमें बनेगा। लेकिन बनानेवालेका भाव है वह शुभ है। और वह शुभ है वह दुःख है। आलाहा..! दुःख है उतना तो कला, लेकिन भाषा थोड़ी कडक है, उस शुभमें पुरुषार्थ करता है वह नंपुसक है। ऐसा पाठ है। आलाहा..! दो जगह पाठ है। पुण्य-पाप अधिकार और अज्ब अधिकार, दो जगह है। क्लिव.. क्लिव। अपने वीर्यकी रचना, भगवान आत्माका वीर्य उसे कलते हैं, जड वीर्यसे बर्ये पैदा होते हैं, वह जड मिट्टी धूल है, अपना अंतर जो आत्मबल-वीर्य, उस वीर्यका सामर्थ्य क्या है? कि अपने स्वरूपकी रचना करे। पाठ है, समयसार. ४७ शक्तिमें। वीर्य उसे कलते हैं कि अपने स्वरूपकी रचना करे वीर्य। आलाहा..! ज्ञान, आनंद, शांति, वीतरागताकी रचना करे वह वीर्य। शुभभावकी रचना करे वह वीर्य नहीं। आलाहा..! गजब बात है। शुभभाव करे उसे नंपुसक कलनेमें आया है। क्योंकि नंपुसकमें प्रजा होनेकी शक्ति नहीं है। ऐसे शुभभावमें धर्मकी प्रजा होनेकी शक्ति नहीं है। आलाहा..! पंडितज! ... मार्ग तो यह है, भाई!

ऐसा मनुष्यत्व अनंत कालके बाद मिला और यवा जायेगा। इसकी तो राभ तो जायेगी और सत्ता जायेगी। आत्माकी सत्ताका नाश नहीं होता। जिसे २५-५० साल पूरे हो गये, उसे २५-५० साल नहीं निकलेंगे। देहकी तो राभ हो जायेगी, आत्मा यवा जायेगा, कहां जायेगा? कुछ भान नहीं है। मैं कौन हूं, कहां हूं। आलाहा..! ऐसे आत्माकी गति क्या होगी? आलाहा..! यहां तो आत्माकी गति करनेके लिये यह कलते हैं। पाटनीज! कठिन बात है, प्रभु! आलाहा..!

‘आत्माको प्राप्त करनेका जिसे दृढ निश्चय हुआ है उसे प्रतिकूल संयोगोंमें भी...’ बराबर है. ‘रहस्योंसे भरपूर वाक्योंका भूज गहरा मंथन...’ अंक द्रव्य दूसरे द्रव्यको छूता नहीं. गहरा गंभीर विचार करना पड़ेगा. यह अंगूठी इसको छूती नहीं.

मुमुक्षु :- छू तो रही है.

उत्तर :- कौन कहता है? इसको देखो. इसको देखते हैं तो छूती है ऐसा लगता है, उसको देखे तो भिन्न है. देखनेकी दृष्टि अज्ञानीकी संयोग पर है. और संयोगसे देखता है इसलिये विज्ञान दिखनेमें आता है. लेकिन वस्तुके स्वभावसे देखे तो उसे अविज्ञान भासे. आह्ला..! ऐसी (बात) है, भाई!

दृष्टांत. जल है, जल. अग्नि आयी, जल गरम हुआ. अब उसे देखनेकी दो दृष्टि. अज्ञानी ऐसा देखता है कि अग्नि आयी इसलिये गरम हुआ. ज्ञानी देखते हैं कि उसके स्पर्शगुणकी ठंडी पर्याय थी, वह पलटकर गरम हुई है, अग्निसे नहीं.

मुमुक्षु :- ...

उत्तर :- उसका स्वभाव देखते हैं. बराबर है? पंडितजी! दो चीज हुई न? अग्नि और पानी. पहले पानी ठंडा था, फिर गरम हुआ. अज्ञानी संयोगको देखता है कि अग्नि आयी और गरम हुआ. ज्ञानी वस्तुके स्वभावको देखते हैं. स्पर्शगुणकी पर्याय उष्णरूपसे परिणामी है वह अपनेसे परिणामी है. अपना स्वभाव कमबद्धमें आया उससे परिणामी है. अग्निसे उष्ण हुआ नहीं. अग्निसे पानी उष्ण हुआ नहीं, तीन कालमें. अरे.. अरे..! ऐसी बातें.

मुमुक्षु :- अग्निके बिना लो ज्ञाता?

उत्तर :- अग्निके बिना लो ज्ञाता है. उसका स्पर्शगुण है, ठंडा पलटकर उष्ण होता है. निमित्त लो. निमित्त भवे लो. लेकिन निमित्तसे होता है ऐसी बात नहीं है. कठिन बात है, भाई! आह्ला..! साधारण बात तो पूरी दुनिया करती है. यह बात अलौकिक है.

यहां वह कहते हैं, ऐसा ज्वालामें आया कि अंक द्रव्य दूसरे द्रव्यको छूता नहीं. बिच्छु काटता नहीं. बिच्छु परद्रव्य है, शरीर परद्रव्य है. शांतिसे सुनना. बिच्छुकी ओर दृष्टि करे तो बिच्छु भिन्न है, बिच्छुमें है. और यहां जो उंभ लगा है, वह परमाणुकी पर्यायमें होनेवाला हुआ है, बिच्छुसे नहीं. आह्ला..! ऐसा मार्ग.

मुमुक्षु :- बिच्छु उंभ नहीं मारता.

उत्तर :- उंभ मारता है. उंक मारता है, उस वक्त उसमें रहता है. उंभ परको

नहीं छूता. आलाला..! ऐसी बात है. आलाला..! कोई भी अेक द्रव्य परमाणुमें लो. शास्त्रमें पाठ आता है. परमाणुमें दो गुण चीकनालट लो और दूसरेमें चार गुण चीकनालट लो, तो चार गुण लो जाता है. लेकिन वल चार गुण था ँसलवले चार गुण लुआ, ँसलवले नहीं. अपनी पर्यायके क्मबलद्वमें चार गुण लोनेवाली थी तो लुं है. चार गुण साथमें आया ँसलवले चार गुण लुआ, ऐसी बात है नहीं. आलाला..! गजब बात है! उल लुआ न? ःप. कलसीने ललजा है.

**अंतरका तल ढोञकर आत्माको पहललान. शुल परललाम, धारणा आदलका थोडा परुआर्थ करके 'मेंने लहुत कलया है' ऐसा मानकर, शुप आगे लढनेके लदले अलक जाता है. अलानीको जरा कुल आ जाय, धारणासे याद रह जाय, वहां लसे अललमान लो जाता है; क्यलके वस्तुके अगाध स्पलपका लसे ढ्याल ही नहीं है; ँसलवले वह लुद्वलके वलकास आदलमें संतुष्ट लोकर अलक जाता है. ज्ञानीको पूर्णताका लक्ष्य लोनेसे वह अंशमें नहीं अकलता. पूर्ण पर्याय ढ्रगत लो तो ली स्पलमाव था सो ढ्रगत लुआ ँसमें नया क्यल है? ँसलवले ज्ञानीको अललमान नहीं लोता. ःप.**

ःप. 'अंतरका तल ढोञकर आत्माको पहललान.' आलाला..! लललनके वचन है, अनुलभवपूर्वक वचन है. अतीन्द्रलय आनंदके अनुलभवपूर्वक. आलाला..! सम्यज्दर्शन यानी श्रद्धा मात्र नहीं. सम्यज्दर्शन यानी पूरा द्रव्य ढलट जाता है. और जलतने गुणकी संख्या अनंती-अनंती है, वल सम्यज्दर्शनमें सब अनंत गुणका अंश वलकत-लालर आता है. क्यल कलल? जलतने संख्यामें गुण आत्मामें है, अनंत.. अनंत.. अनंत.. अनंत.. अनंत. अेक-अेक आत्मामें, अेक-अेक परमाणुमें अनंत-अनंत (गुण है). अेक सेकंडमें असंख्य समय, ऐसे त्रलकाल समय है तीनों कालका, लसेसे अनंतगुना गुण अेक लुवमें है. आलाला..! समजमें आया? अेक गुण ली दूसरेको-दूसरी चीञको लूता नहीं. अपनी ढरललतिमें रलता है. आलाला..! कोई द्रव्यको लठा सके ऐसा नहीं है. आलाला..! यलं तो वल कलते हैं, ःप देढो!

'अंतरका तल ढोञकर...' आलाला..! अंतरका तल-ढाताल, ढर्यायका ढाताल. ढर्याय लपर तलरती है. थोडा ढानी लो और लपर तलकल ललंदु डाले, ढांच-सात-दस ललंदु ललमें ढ्रवेश नहीं करेगा, वल लपर रलेगा. ऐसे ढर्याय चाले जलतनी ली लो, लेकिन लपर रलेगी, ध्रुवमें नहीं ढ्रवेश करेगी. आलाला..! यलं कलते हैं, 'अंतरका तल...' ढर्यायमें अंतरका तल ढोञकर. आलाला..! क्यल कलते हैं? वलतमान

निर्मल पर्याय, जो पर्याय राग पर अनादिसे जुक गँ है, जैसे तो लोकमें पूरी दुनिया पडी है, दुःखी, लेकिन उस पर्यायका लक्ष्य छोडकर, दूसरी पर्याय द्रव्यमेंसे आती है और वही पर्याय द्रव्यमें अकाकार होती है. तब यहां कलते हैं कि अंतरका तल-उस पर्यायके पीछे-नीचे पूरा ध्रुव तल है. आलाला..! समझे? **‘अंतरका तल भोजकर...’** भगवान आत्मा पूर्णानंदका नाथ वीतरागमूर्ति त्रिकाव निरावरण, त्रिकाव अण्ड, त्रिकाव अक, दो नहीं, अकड़प त्रिकाव. आलाला..! द्रव्य और पर्याय दो, ऐसा भी नहीं. त्रिकाव द्रव्य जो अकड़प है, उसका तल. उसका तल भोजकर. आलाला..! ऐसी बात.

आत्मवस्तुमें दो भाग. अक पर्याय-अवस्था और अक ध्रुव. ध्रुव नित्य रहनेवाली चीज पलटती नहीं. उपरकी अवस्था है वह पलटती है-बदलती है. बदलती पर्यायके नीचे ध्रुव तल है. उस ध्रुवको यहां तल कलते हैं. पर्यायका तल है. आला..! अरेरे..! बलिनके वचन है. **‘अंतरका तल भोजकर...’** अंतरका तल भोजकर. **‘आत्माको पहिचान.’** आला..! अंतरका तल. अतीन्द्रिय सलजानंद स्वरूप प्रभु, अनंत गुणका राशि. आलाला..! ढेर. अनंत गुणका ढेर. जैसे भगवानको अंतरमें भोज. बाह्यकी क्रियाकांडसे नहीं मिलेगा. तेरा दया, दान, व्रत, भक्ति, तप, मंदिरका दर्शन और मंदिरका गजरथ, जुलूस आदिसे आत्मा बिलकूल मिलेगा नहीं. आलाला..! उसमें कदाचित् रागकी मंदता हो तो शुभभाव है. शुभभावको चैतन्य भगवान छूता नहीं. आलाला..! अंदरमें गहराईमें जाकर, **‘अंतरका तल भोजकर...’** देओ! आलाला..! **‘अंतरका तल भोजकर आत्माको पहिचान.’**

**‘शुभ परिणाम, धारणा...’** कोई शुभ परिणाम किये क्रियाकांडके अथवा शास्त्रकी धारणा की. **‘आदिका थोडा पुरुषार्थ करके ‘मैंने बहुत किया है’...’** ऐसा उसको अभिमान हो जाता है. आलाला..! रागसे दूर होकर अंदरमें उतर जाना है, यह पुरुषार्थ है. इस पुरुषार्थकी तो जबर नहीं और उपरमें राग घटाये, शुभराग (करे) और शास्त्रकी कुछ धारणा (कर ले), धारणा क्या, आरह अंगका ज्ञान हो, तो भी आत्मज्ञान नहीं होता. आला..! यहां कलते हैं कि, **‘थोडा पुरुषार्थ करके ‘मैंने बहुत किया है’ ऐसा मानकर...’** थोडा बाह्य त्याग किया तो (मान लिया कि) मैंने बहुत किया. थोडा सूक्ष्म पडेगा.

आत्मा इस कपडेको छू सकता नहीं और कपडेको ले सकता नहीं. बाह्य चीजको आत्मा छोड सकता नहीं और दे सकता नहीं. क्योंकि बाह्य चीजको आत्मा छूता नहीं. आलाला..! थोडी बाह्य चीजको छोडी और हो गये हम त्यागी. कठिन बात

है, नाथ! तेरी यीज कोई अवलौकिक है. बाहरसे... चांदमलज्ज थे न? उदयपुर. बहुत साल पहलेकी बात है. चांदमलज्ज कहे, भगवान तीर्थकर कपडे उतारते हैं. तो उतार सके नहीं. कला, नहीं. चांदमलज्ज थे, उदयपुर. यहां आये थे. रहे थे. नम्र द्विगंबर जब होते हैं भगवान, तब कपडे उतारते हैं. कला कि, परयीज उतारनी और ओढनी, आत्मामें है ही नहीं. वह यीज उसके कारणसे आयी है, उसके कारणसे रही है और उसके कारणसे हटती है. आलाहा..! कठिन बात है. द्विगंबर दशा करे तब कपडा छोडना पडे. छोडना पडेका अर्थ वह छूटनेका पर्यायिका काल है. उस क्रममें परमाणु उस प्रकारसे रहनेवाले थे. आत्माने उसे छोडा ऐसी बात नहीं है. आलाहा..!

मुमुक्षु :- .. करे तो कपडा छूटे न?

उत्तर :- बिलकूल नहीं. कल कला था. आत्मामें अेक शक्ति है. त्यागउपादानशून्यत्वशक्ति. क्या (कला)? परका त्याग और परका ग्रहण, उसका ... उपादान. त्यागउपादानशून्यत्व. परका त्याग और परके ग्रहणसे आत्मा शून्य है. आलाहा..! ऐसी शक्ति है अंदर. ४७ शक्तिमें. त्यागउपादानशून्यत्व शक्ति.

मुमुक्षु :- वह तो निश्चयकी बात है.

उत्तर :- बात सच्यी है. निश्चयकी यानी सत्य बात. सत्य बात यह है, बाकी सब उपचारिक बातें है. लेकिन उपचरित भी निश्चय हो तब. निश्चय बिना उपचार लागू नहीं पडता. आलाहा..! ऐसी बात है. कपडा छोडना या लेना, परद्रव्यका त्याग और ग्रहण. त्याग और ग्रहण. अेक रजकणका भी त्याग और ग्रहण, आत्माकी शक्ति त्यागउपादान गुण है, उस गुणके कारणसे परका त्याग-ग्रहणका त्याग है. आलाहा..! अभी तो परसे भिन्न है, उसके बढवे थोडा कुछ छोडा तो हमने छोडा 'ऐसा माने. तेरी मान्यतामें ईर्क है. ज्य्यादासे ज्य्यादा राग है उसका नाश करे, ऐसा कलौ तो कल सक्ते हैं. वह भी व्यवहारनयसे. रागका नाश करना भी व्यवहारनयसे. निश्चयसे तो आत्मा आनंदमें रहता है, रागकी उत्पत्ति होती नहीं, उसको रागका नाश किया ऐसा कलनेमें आता है. आलाहा..! ऐसा उपदेश कैसा? आला..! मार्ग सूक्ष्म है, बापू! अंतरका मार्ग बहुत गूढ और गहरा है. आलाहा..!

यहां यह कला, कौन-सा है? ४५. 'शुभ परिणाम, धारणा आदिका थोडा पुरुषार्थ करके 'मैंने बहुत किया है' ऐसा मानकर जव आगे बढनेके बढवे अटक जाता है.' आला..! मैंने श्री छोडी, कुटुंब छोडा, दुकान छोडी, धंधा छोडा. जैसे मैंने बहुत छोडा, यह बात ही गूढ है. उसने ग्रहण ही नहीं किया है तो छोडे क्या?

आलाला..! परचीजको कभी ग्रहण किया ही नहीं. ग्रहण-त्यागसे शून्य है. उसका मैंने त्याग किया वह तो मिथ्या अभिमान है. आलाला..!

‘अज्ञानीको जरा कुछ आ ज्ञाय, धारणासे याद रह जाय,...’ शास्त्र पढकर याद रह जाय. वैसे तो चारह अंग याद रह गये. अेक अंगमें १८ लज्जर पद, और अेक पदमें ५१ कोड श्लोक, जैसे-जैसे चारह अंग अनंत बार कंठस्थ किये. आलाला..! ज्ञानस्वरूप जे आत्मज्ञान, उससे भिन्न है. आलाला..! यहां वह कहते हैं. ‘अज्ञानीको जरा कुछ आ ज्ञाय,...’ मैंने कुछ किया. ‘धारणासे याद रह जाय, यहां उसे अभिमान हो जाता है; क्योंकि...’ क्या कहते हैं? बाह्य त्यागमें अभिमान होनेका कारण, अगाध स्वरूप भगवान है उसे देखा नहीं. अगाध स्वरूप महाप्रभुका है, वह दृष्टिमें आया नहीं. अगाध दरियाकी नजरकी अपेक्षासे नजर नहीं, इसलिये बाहरका अभिमान हो जाता है. क्या कहा? देजो! ‘क्योंकि वस्तुके अगाध स्वरूपका...’ आलाला..! कोडो श्लोककी धारणा कर ले और किसीको ज्ञान भी नहीं हो. शिवभूति अणुगार. मातृष-मारुष ईतना भी याद नहीं रहता था. अंदरका भान था. आत्माकी पर्याय आनंद है ... ईतना भान था और केवलज्ञान प्राप्त किया है. इसलिये कुछ शब्दोंका ज्ञान हो तो उसे ज्ञान कहते हैं, जैसा नहीं है. आलाला..! मातृष और मारुष चार शब्द याद नहीं रहते थे. अंतरमें अनुभव और आनंद था. आलाला..!

यहां वह कहते हैं, ‘वस्तुके अगाध स्वरूपका उसे ज्वाल ही नहीं है...’ थोड़ी धारणा करके अभिमान हो जाय, थोडा त्याग करके अभिमान हो जाय. वस्तुका स्वरूप अगाध है, तीनों काव परसे रहित है, उसमें कोई कमी नहीं है. उसकी पर्यायका भी अंदर प्रवेश नहीं है. राग तो अंदर प्रवेश करता नहीं, परंतु उपरकी पर्याय ध्रुवमें प्रवेश नहीं करती. आलाला..! जैसे अगाध स्वभावका ज्वाल नहीं है. इसलिये उपर-उपरके भावमें उसको अभिमान हो जाता है. ‘इसलिये वह बुद्धिके विकास आदिमें संतुष्ट होकर अटक जाता है. ज्ञानीको पूर्णताका लक्ष्य होनेसे...’ धर्मी तो पूर्ण स्वरूप भगवान अंदर पूर्ण स्वरूप, परमात्मा पूरा है... आलाला..! जैसा ‘लक्ष्य होनेसे वह अंशमें नहीं अटकता.’ धारणा आदि अंश है उसमें नहीं अटकता.

‘पूर्ण पर्याय प्रगट हो तो भी स्वभाव था सो प्रगट हुआ...’ पूर्ण था वह आया. उसमें नयी चीज क्या है? आलाला..! ‘इसमें नया क्या आया? इसलिये ज्ञानीको अभिमान नहीं होता.’ कोई भी चीजका. (श्रोता :- प्रमाण वचन गुरुदेव!)